Official Periodical of Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi
श्री साईबाबा संस्थान विश्वस्तव्यवस्था, शिर्डी की अधिकृत पत्रिका

SHRI SAI LEELA श्री साई लीला

* Year 20 * Issue 6 * November-December 2020 * ₹ 15/-
* वर्ष २० * अंक ६ * नवम्बर-दिसम्बर २०२० * ₹ १५/-

Wish You A Happy & Prosperous NEW Year 2021

January

SU	31	3	10	17	24
MO		4	11	18	25
TU		5	12	19	26
WE		6	13	20	27
TH		7	14	21	28
FR	1	8	15	22	29
SA	2	9	16	23	30

February

SU		7	14	21	28
MO	1	8	15	22	
TU	2	9	16	23	
WE	3	10	17	24	
TH	4	11	18	25	
FR	5	12	19	26	
SA	6	13	20	27	

March

SU		7	14	21	28
MO	1	8	15	22	29
TU	2	9	16	23	30
WE	3	10	17	24	31
TH	4	11	18	25	
FR	5	12	19	26	
SA	6	13	20	27	

April

SU		4	11	18	25
MO		5	12	19	26
TU		6	13	20	27
WE		7	14	21	28
TH	1	8	15	22	29
FR	2	9	16	23	30
SA	3	10	17	24	

SHREE SAIBABA SANSTHAN TRUST, SHIRDI

Hon'ble Members of Ad-hoc Committee

Sri Srikant Anekar (Chairman)
Principal District & Sessions Judge, Ahmednagar

Sri Kanhuraj Bagate (I.A.S.)
Chief Executive Officer

Sri Bhanudas Palave
Additional Revenue Divisional Commissioner, Nashik

Smt. Geeta Pravin Bankar
Asstt. Charity Commissioner, Ahmednagar

Internet Edition - URL:http://www.shrisaibabasansthan.org

श्री साईं लीला

वर्ष २०   अंक ६

सम्पादक : मुख्य कार्यकारी अधिकारी
कार्यकारी सम्पादक : भगवान दातार

SHRI SAI LEELA

Year 20   Issue 6

Editor : Chief Executive Officer
Executive Editor : Bhagwan Datar

अंतरंग

- श्री नारदपुराण में वर्णित पावन श्री दत्तात्रेय स्तोत्र : प्रस्तुति डॉ. सुबोध अग्रवाल ... ४
- श्री साईं बाबा संस्थान में दत्त जयंती उत्सव ... ९
- How Shirdi Sai Baba Transformed Dasganu Maharaj Into Narad Muni... : Dr. Subodh Agarwal ... 10
- शिर्डी साईं बाबा – श्री साईंनाथ नाम क्यों ? : सुरेश चन्द्र ... १४
- औदुंबर तले दत्तगुरु के दर्शन हुए! : श्रीमती मयूरी महेश कदम हिंदी अनुवाद श्रीमती अरुणा वि. नायक ... १७
- Shirdi News ... 21

● Cover & inside pages designed by Don Bosco and Prakash Samant (Mumbai) ● **Computerised Typesetting:** Computer Section, Mumbai Office, Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi ● **Office :** 'Sai Niketan', 804-B, Dr. Ambedkar Road, Dadar, Mumbai - 400 014. Tel. : (022) 24166556 Fax : (022) 24150798 E-mail : saidadar@sai.org.in ● **Shirdi Office :** At Post Shirdi - 423 109, Tal. Rahata, Dist. Ahmednagar. Tel. : (02423) 258500 Fax : (02423) 258770 E-mail : 1. saibaba@shrisaibabasansthan.org 2. saibaba@sai.org.in ● **Annual Subscription : Rs. 125/-** ● **Subscription for Life : Rs. 2,500/-** ● **Annual Subscription for Foreign Subscribers : Rs. 1,000/-** (All the Subscriptions are Inclusive of Postage) ● **General Issue : Rs. 15/-** ● **Shri Sai *Punyatithi* Annual Special Issue : Rs. 25/-** ● Published and printed by the Chief Executive Officer, on behalf of Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi at Sai Niketan, 804-B, Dr. Ambedkar Road, Dadar, Mumbai - 400 014 and at the Hira Print Solutions Pvt. Ltd., A-313, T.T.C. Industrial Area, Mahape, Navi Mumbai - 400 710 respectively. The Editor does not accept responsibility for the views expressed in the articles published. All objections, disputes, differences, claims and proceedings are subject to Mumbai jurisdiction.

श्री नारद पुराण में वर्णित
पावन श्री दत्तात्रेय स्तोत्र

अस्य श्रीदत्तात्रेयस्तोत्र –

जटाधरं पांडुरांगं शूलहस्तं कृपानिधिम्।
सर्वरोगहरं देवं दत्तात्रेयमहं भजे।।१।।

(पीले वर्ण की आकृति वाले, जटा धारण किये हुए, हाथ में शूल लिये हुए, कृपा के सागर तथा सभी रोगों का शमन करने वाले देवस्वरूप दत्तात्रेय जी का मैं आश्रय लेता हूँ।)

With matted locks, Panduranga (Krishna/Vishnu), holding trident, the ocean of mercy and the divine remover of all maladies. I worship Dattatreya.

अस्य श्री दत्तात्रेयस्तोत्रमंत्रस्य
भगवान् नारदऋषिः।
अनुष्टुप् छन्दः।
श्रीदत्तपरमात्मा देवता।
श्रीदत्तप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।।

(इस दत्तात्रेयस्तोत्ररूपी मन्त्र के ऋषिः भगवान् नारद हैं, छन्दः अनुष्टुप है और परमेश्वर–स्वरूप दत्तात्रेय जी इसके देवता हैं, श्री दत्तात्रेय जी की प्रसन्नता के लिए पाठ में विनियोग किया जाता है।)

For the *mantras* of this Dattatreya *Stotram*:
Bhagavan Narad is the sage;
anushtup (four lines of eight syllables) is the meter;
Srri Datta, the Supreme Self, is the Deity;
it is recited in order to please Shri Datta.

जगदुत्पत्तिकर्त्रे च स्थितिसंहार हेतवे।
भवपाशविमुक्ताय दत्तात्रेय नमोऽस्तुते।।१।।

(संसार के बन्धन से सर्वथा विमुक्त तथा संसार की उत्पत्ति, पालन और संहार के मूल कारण–स्वरूप दत्तात्रेय जी, आपको मेरा नमस्कार है।)

The origin of the universe, You are its cause, preservation and destruction, and completely free from bondage to the world — Dattatreya, we bow to You.

जराजन्मविनाशाय देहशुद्धिकराय च।
दिगम्बरदयामूर्ते दत्तात्रेय नमोऽस्तुते।।२।।

(जरा और जन्म–मृत्यु के चक्र से मुक्त कराने वाले, देह को बाहर–भीतर से शुद्ध करने वाले स्वयं दिगम्बर–स्वरूप, दया के मूर्तिमान विग्रह दत्तात्रेय जी, आपको मेरा नमस्कार है।)

The destroyer of old age and birth, Your body is pure,
naked (sky-clad), the image of compassion — Dattatreya, we bow to You.

कर्पूरकान्तिदेहाय ब्रह्मूर्तिधराय च।
वेदशास्त्रपरिज्ञाय दत्तात्रेय नमोऽस्तुते।।३।।

(कर्पूर की कांति के समान गौर शरीर वाले, ब्रह्मा जी की मूर्ति को धारण करने वाले और वेद–शास्त्र का पूर्ण ज्ञान रखने वाले दत्तात्रेय जी, आपको मेरा नमस्कार है।)

Your body is radiant like camphor, the manifested image of *Brahman*;
You are the knower of the *vedic* scriptures — Dattatreya, we bow to You.

ह्रस्वदीर्घकृशस्थूल–नामगोत्र–विवर्जित।
पंचभूतैकदीप्ताय दत्तात्रेय नमोऽस्तुते।।४।।

(कभी छोटे क़द वाले, कभी लम्बे, कभी स्थूल और कभी दुबले–पतले शरीर धारण करने वाले, नाम–गोत्र से विवर्जित, केवल पंचमहाभूतों से युक्त दीप्तिमान शरीर धारण करने वाले दत्तात्रेय जी, आपको मेरा नमस्कार है।)

You are beyond (designations such as) short, tall, thin, fat, name and lineage.
You set ablaze the five elements — Dattatreya, we bow to You.

यज्ञभोक्ते च यज्ञाय यज्ञरूपधराय च।
यज्ञप्रियाय सिद्धाय दत्तात्रेय नमोऽस्तुते।।५।।

(यज्ञ के भोक्ता, यज्ञ–विग्रह और यज्ञ–स्वरूप को धारण करने वाले, यज्ञ से प्रसन्न होने वाले, सिद्धरूप दत्तात्रेय जी, आपको मेरा नमस्कार है।)

You are the enjoyer of sacrifice and the sacrifice itself, the form of sacrifice,
the lover of sacrifice, and the perfected sage — Dattatreya, we bow to You.

आदौ ब्रह्मा मध्य विष्णुरंते देवः सदाशिवः।
मूर्तित्रयस्वरूपाय दत्तात्रेय नमोऽस्तुते।।६।।

(सर्वप्रथम ब्रह्मारूप, मध्य में विष्णुरूप और अन्त में सदाशिव स्वरूप – इन तीनों स्वरूपों को धारण करने वाले दत्तात्रेय जी, आपको मेरा नमस्कार है।)

In the beginning is Brahma, in the middle is Vishnu, and at the end is God Sadashiv.
Your nature consist of these three Deities — Dattatreya, we bow to You.

भोगालयाय भोगाय योगयोग्याय धारिणे।
जितेन्द्रियजितज्ञाय दत्तात्रेय नमोऽस्तुते।।७।।

(समस्त सुख–भोगों के निधानस्वरूप, सभी योग्य व्यक्तियों में भी उत्कृष्ट योग्यतम रूप धारण करने वाले, जितेंद्रिय तथा जितेंद्रियों की ही जानकारी देने वाले दत्तात्रेय जी, आपको मेरा नमस्कार है।)

You are the abode of enjoyment, and enjoyment itself. You are the support of those qualified for *Yog*.
You are the master of the senses,

and the master of knowledge — Dattatreya, we bow to You.

दिगम्बराय दिव्याय दिव्यरूपध्राय च।
सदोदितपरब्रह्म दत्तात्रेय नमोऽस्तुते।।८।।

(सदा दिगम्बर वेषधारी, दिव्य मूर्ति और दिव्यस्वरूप धारण करने वाले, जिन्हें ही परब्रह्म परमात्मा का साक्षात्कार होता रहता है, ऐसे दत्तात्रेय जी, आपको मेरा नमस्कार है।)

Naked (sky-clad), Your form shines with divinity.
You are the eternal Supreme *Brahman* — Dattatreya, we bow to You.

जम्बुद्विपमहाक्षेत्रमातापुरनिवासिने।
जयमानसतां देव दत्तात्रेय नमोऽस्तुते।।९।।

(जम्बूद्वीप के विशाल क्षेत्र के अन्तर्गत मातापुर नामक स्थान में निवास करने वाले, संतों के बीच में सदा प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाले दत्तात्रेय जी, आपको मेरा नमस्कार है।)

In Jambudvipa (India), in the great land (Maharashtra), Your abode is Matapur.
Having conquered the mind, You are Divinity Itself — Dattatreya, we bow to You.

भिक्षाटनं गृहे ग्रामे पात्रं हेममयं करे।
नानास्वादमयी भिक्षा
दत्तात्रेय नमोऽस्तुते।।१०।।

(हाथ में सुवर्णमय भिक्षापात्र लिए हुए, ग्राम–ग्राम और घर–घर में भिक्षाटन करने वाले तथा अनेक प्रकार के दिव्य स्वादयुक्त भिक्षा ग्रहण करने वाले दत्तात्रेय जी, आपको मेरा नमस्कार है।)

As a naked beggar You move between homes and villages with a golden bowl in Your hand,
collecting various delicious alms — Dattatreya, we bow to You.

ब्रह्मज्ञानमयी मुद्रा वस्त्रे चाकाशभूतले।
प्रज्ञानघनबोधाय दत्तात्रेय नमोऽस्तुते।।११।।

(ब्रह्मज्ञानयुक्त ज्ञानमुद्रा को धारण करने वाले और आकाश तथा पृथ्वी को ही वस्त्ररूप में धारण करने वाले, अत्यन्त ठोस ज्ञानयुक्त बोधमय विग्रह वाले दत्तात्रेय जी, आपको मेरा नमस्कार है।)

Full of the knowledge of *Brahman*, joyful and clothed in the element of space,
Your teachings reveal the highest wisdom — Dattatreya, we bow to You.

अवधूतसदानंदपरब्रह्मस्वरूपिणे।
विदेहदेहरूपाय दत्तात्रेय नमोऽस्तुते।।१२।।

(अवधूत वेष में सदा ब्रह्मानंद में निमग्न रहने वाले तथा परब्रह्म परमात्मा के ही स्वरूप, शरीर होने पर भी शरीर से ऊपर उठ कर जीवनमुक्तावस्था में स्थित रहने वाले दत्तात्रेय जी, आपको मेरा नमस्कार है।)

The *avadhuta*, ever-blissful, Your nature is the Supreme *Brahman*.
In the form of a body, without body consciousness — Dattatreya, we bow to You.

सत्यंरूपसदाचारसत्यधर्मपरायण।
सत्याश्रयपरोक्षाय दत्तात्रेय नमोऽस्तुते।।१३।।

(साक्षात् सत्य के रूप, सदाचार के मूर्तिमान स्वरूप और सत्य भाषण एवं धर्माचरण में लीन रहने वाले, सत्य के आश्रय और परोक्ष रूप में परमात्मा तथा दिखाई न पड़ने पर भी सर्वत्र व्याप्त दत्तात्रेय जी, आपको मेरा नमस्कार है।)

Your form is truth, Your conduct is pure, You follow the *dharma* of truth, and Your shelter is truth, supreme

and unending — Dattatreya, we bow to You.

शूलहस्तगदापाणे वनमालासुकन्धर।
यज्ञसूत्रधरब्रह्मन् दत्तात्रेय नमोऽस्तुते।।१४।।

(हाथ में शूल तथा गदा धारण किये हुए, वनमाला से सुशोभित कन्धों वाले, यज्ञोपवीत धारण किये हुए ब्राह्मणस्वरूप दत्तात्रेय जी, आपको मेरा नमस्कार है।)

You hold trident and mace and wear
a garland of forest flowers
and the sacrificial tread of a *Brahmin*
— Dattatreya, we bow to You.

क्षराक्षरस्वरूपाय परात्परतराय च।
दत्तमुक्तिपरस्तोत्र दत्तात्रेय नमोऽस्तुते।।१५।।

(क्षर (नश्वर विश्व) तथा अक्षर (अविनाशी परमात्मा) रूप में सर्वत्र व्याप्त, पर से भी परे, स्तोत्र–पाठ करने पर शीघ्र मोक्ष देने वाले दत्तात्रेय जी, आपको मेरा नमस्कार है।)

Your nature is both perishable and imperishable. You have gone beyond
even the transcendental reality.
Datta, liberated and beyond praise —
Dattatreya, we bow to You

दत्त विद्याढ्यलक्ष्मीश दत्त स्वात्मस्वरूपिणे।
गुणनिर्गुणरूपाय दत्तात्रेय नमोऽस्तुते।।१६।।

(सभी विद्याओं को प्रदान करने वाले, लक्ष्मी के स्वामी, प्रसन्न होकर आत्मस्वरूप को ही प्रदान करने वाले, त्रिगुणात्मक एवं गुणों से अतीत निर्गुण अवस्था में रहने वाले दत्तात्रेय जी, आपको मेरा नमस्कार है।)

Datta, endowed with wisdom and the Lord of wealth. Datta, whose nature
is the Self.
Your form is both with attributes and without attributes — Dattatreya, we bow to You.

शत्रुनाशकरं स्तोत्रं ज्ञानविज्ञानदायकम्।
सर्वपापं शमं याति दत्तात्रेय नमोऽस्तुते।।१७।।

(यह स्तोत्र वाह्य तथा आभ्यान्तर (काम, क्रोध, मोहादि) सभी शत्रुओं को नष्ट करने वाला, शास्त्रज्ञान तथा अनुभवजन्य अध्यात्मज्ञान – दोनों को प्रदान करने वाला है, इसका पाठ करने से सभी पाप तत्काल नष्ट हो जाते हैं, ऐसे इस स्तोत्र के आराध्य दत्तात्रेय जी, आपको मेरा नमस्कार है।)

This hymn destroys enemies,
bestows knowledge and wisdom,
and pacifies all sins — Dattatreya,
we bow to You

इदं स्तोत्रं महद्दिव्यं दत्तप्रत्यक्षकारकम्।
दत्तात्रेयप्रसादाच्च नारदेन प्रकीर्तितम्।।१८।।

(यह स्तोत्र बहुत दिव्य है, इसके पढ़ने से दत्तात्रेय जी का साक्षात् दर्शन होता है, दत्तात्रेय जी के अनुग्रह से ही शक्ति–सम्पन्न होकर नारद जी ने इसकी रचना की है।)

This great divine hymn grants direct
perception of reality.
I, Narad, composed it only by the
grace of Dattatreya.

।।इति श्रीनारदपुराणे नारदविरचितं
दत्तात्रेयस्तोत्रं सुसंपूर्णम्।।

इस प्रकार श्री नारद पुराण में निर्दिष्ट देवर्षि नारद जी द्वारा रचित स्तोत्र समाप्त हुआ।

As mentioned in the Shri Narad
Puran, as recited by Shri Narad,
thus Shri Dattatreya *Stotram* is
concluded.

प्रस्तुति :
डॉ. सुबोध अग्रवाल

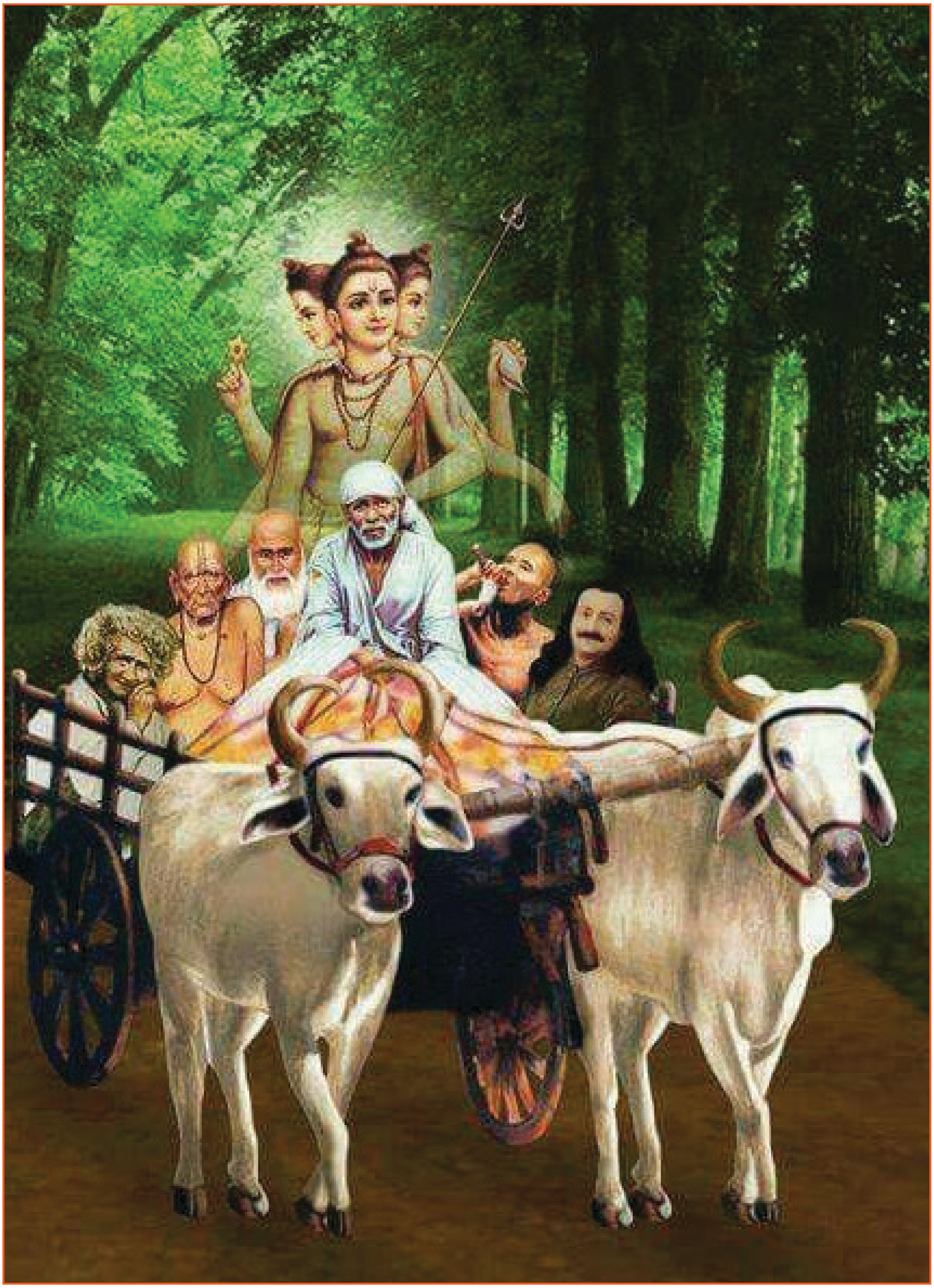

श्री साईं बाबा संस्थान में दत्त जयंती उत्सव

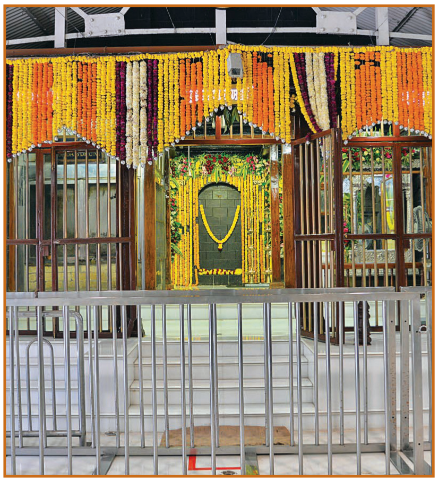

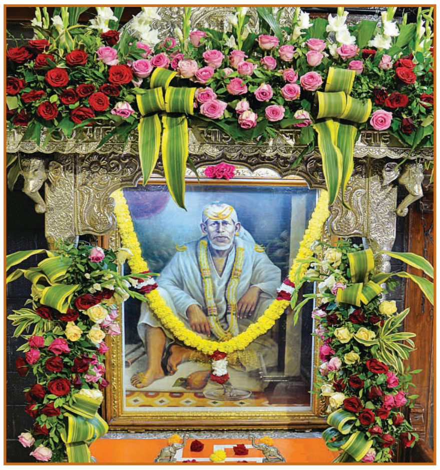

* श्री दत्त जयंती के अवसर पर मंदिर पुजारी श्री उल्हास वाळुंजकर द्वारा दत्त–जन्मोत्सव कीर्तन –

* साईं भक्त श्रीमती रंजनी डांग द्वारा श्री साईं चरणों में अर्पित दान से समाधि मंदिर और लेंडीबाग में स्थित श्री दत्त मंदिर व परिसर में की गई आकर्षक फूलों की मनमोहक सजावट –

* श्री दत्त जयंती के अवसर पर श्री साईं बाबा समाधि मंदिर में संस्थान के मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री कान्हूराज बगाटे व उनकी पत्नी सौ. संगीता बगाटे और उप मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री रवींद्र ठाकरे व उनकी पत्नी सौ. वैशाली ठाकरे की उपस्थिति में श्री दत्त–जन्मोत्सव मनाया गया।

How Shirdi Sai Baba Transformed Dasganu Maharaj Into Narad Muni...

Persons who do *kirtans* (devotional singing, usually accompanied by musical instruments) during festivals are called *Haridas*.The

audience, who come to hear the *kirtans* have different tastes. Some like the erudition of the *Haridas*, some his gestures, some his singing, some his wit and humour, some his preliminary dissertation on *vedant*, and some others, his main stories and so on; but among them, there were very few, who by hearing the *kirtan* got faith and devotion or love for God or saints.

The effect of hearing Dasganu's *kirtan* on the minds of audience was, however, electric, as it were. Dasganu Maharaj, by his splendid *kirtans*, spread the fame of Shirdi Sai Baba in the Konkan (Bombay Presidency). In fact, it was Dasganu Maharaj - May God bless him - who, by his beautiful and inimitable *kirtans*, made Baba available to so many people there. (Shri Sai Satcharita, Chapter 15)

Of the two persons, whom Sai Baba deliberately sought early in His Dwarkamai at Shirdi, Dasganu was one; the other being Nanasaheb Chandorkar. These two gentle men were responsible for making Sai Baba a household name in Western Maharashtra, particularly in Bombay City and Thana, Kolaba and Ratnagiri districts. Dasganu as an itinerant minstrel and Nanasaheb Chandorkar as a revenue official on camp, in the far flung Taluka places, spread the name and fame of Sai Baba in the region referred to above.

There will be hardly a person amongst the devotees of Sai Baba, who has not heard the name and fame of Dasganu.

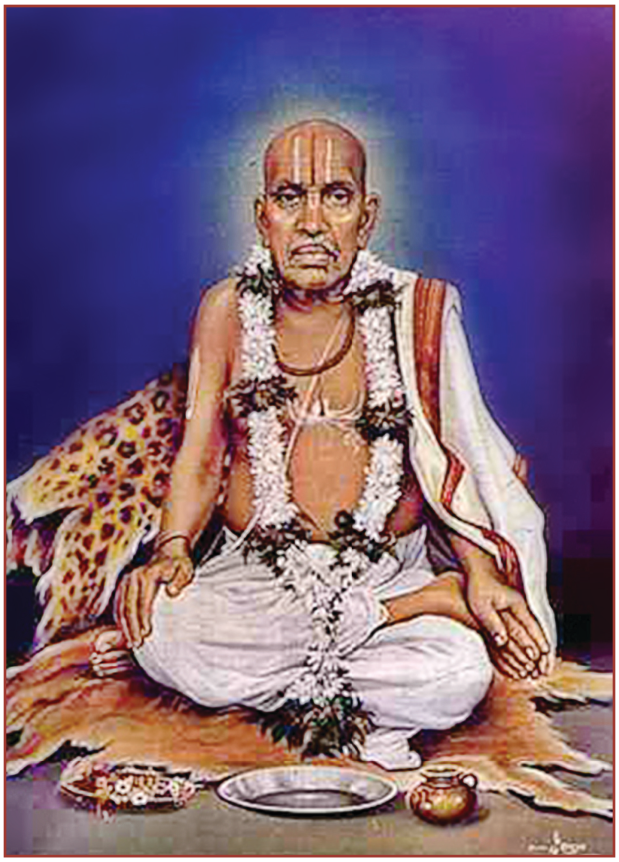

Before turning to *kirtankar*, he was a *Havaldar* in police. Whilst performing his *kirtans*, it was Dasganu's custom to exhibit

a portrait of Sai Baba on a pedestal before starting his *kirtan* and rapidly setting out his experiences of Baba and the miracles He worked, His service to the sick and ailing, and how be assuaged the agonies and miseries, and helped to solve the temporal and spiritual problems of all, who sought His help.

When Baba first met Dasganu, the latter was still in service in the police force of the then Bombay Presidency. His full name was Ganapat Dattatreya Sahasrabuddhe. He was a *tamasha* fan. After a good deal of persuasion, he left the police service, and joined Baba's band-wagon. The progress then became rapid. By Baba's grace and inspiration, he started writing metrical compositions. Amongst his compositions are (1) **Bhakta Leelamrut and Sant-Kathamrut** (life stories of modern saints), (2) **Ishavasya Bhavartha Bodhini** and (3) **Sai Stavanmanjari**.

Bhakta Leelamrut, cited above carries three full chapters depicting a glowing account of Sai Baba. **Sant-Kathamrut**, in its 57th Chapter, sets out in detail Baba's discourse on *dnyan* given to Nanasaheb Chandorkar on one occasion. It is a veritable mine of *Advait* philosophy. **Ishavasya Bhavartha Bodhini**, an elucidation of the substance of Isha Upanishad, was undertaken by Dasganu for the benefit of Marathi readers, at the instance of Sai Baba. He worked on it strenuously for a long time and had proceeded far into it, when doubts began to assail him. He discussed the matter with a few learned and scholarly persons with a view to resolve the doubts. Some of them were dispelled, but not all. A crucial doubt remained unresolved and Dasganu started smarting. At about this time, he happened to go to Shirdi. Sai Baba, jestingly, inquired about his well-being.

Dasganu bitterly flung back to say that at Sai Baba's instance, he had launched upon the translation of **Isha Upanishad**, but stumbled on the road, and his mind was uncertain, whether he had understood the real import or kernel of the Upanishad. Baba then asked him, what his difficulty was. Dasganu explained the difficulty and enthusiastically looked forward to Baba's assistance. Baba patiently told Dasganu that his doubt would be resolved by the maid-servant of Kaka Dixit at Vile Parle, when he would go there. And, true to Baba's words, whilst washing early morning Kaka's household utensils the maid-servant, of tender age, was heard singing a tune, which brought a wisp of fresh air, opening the portals of

Dasganu's befuddled mind, and the difficulty was resolved. (Shri Sai Satcharita, Chapter 20)

The point at stake was "how human happiness or sorrow arose". Did it depend on external environments or was it embedded in the human mind itself? The song sung by the maid-servant, who was seen to be dressed in tattered clothes, came out of the fullness of her heart. In other words, happiness or misery is a *vrutti* (modification) of the mind, and did not depend on the external conditions impinging on the mind. It is truly said that the "mind is its own place, and in itself can make a heaven of hell, a hell of heaven."

The other lesson, which Sai Baba wanted to bring home to Dasganu, was that wisdom was not confined to celebrities; it could as well come from an uncouth, illiterate person like the maid-servant, who was as much the hanwork of God as a socialized celebrity like Sai Baba Himself.

The seed of spiritual life was planted by Sai Baba in Dasganu and with Baba's blessings, it sprouted into a full-blown flower. Otherwise, service in the police department and his love of *tamasha*, an erotic dramatization of rural life, ran counter to the germination of spiritual growth. Sai Baba's blessings carried Dasganu on the crest of a wave of popularity, and he became a missionary to spread Sai Baba's message amongst the masses, who were steeped in ignorance, intolerance, superstitions and all sorts of preconceived ideas of life.

Sai Baba assigned to Dasganu the fourth Ramnavami celebrations at Shirdi. The first three celebrations had been carried out without the participation of Dasganu. The fourth and all subsequent celebrations, till His demise, were the handiwork of Dasganu.

Kirtankars, in Maharashtra, usually

wear a *dhoti* up to the knees, with a waist coat or shirt and a turban.

Once, while powering himself up to set out for *kirtan*, Dasganu Maharaj dressed up in taste, and placed a glittering turban on his head. Just prior to his leaving Shirdi for Thane for performing *kirtan*, he came to the Dwarkamai-*Masjid* to seek Baba's permission. (Thane is a city in the Indian state of Maharashtra, situated in the Konkan division. It is a part of the Mumbai Metropolitan Region.)

Sai looked at him with His quizzing eyes, wondering what prompted him to dress up like a bridegroom. Baba asked him, why he came dressed in that fashion. Then, Baba asked him to shun this spectacular display of pomp and pageantry by removing all the paraphernalia, including the turban that rested proudly on his head.

Dasganu immediately withdrew the entire kit of pompous garments - the coat, the *uparani* (*Uparani* is the name for the traditional upper *dhotar*. *Dhotar* is the Marathi term for *dhoti*.), and the *pheta* (*Pheta* is the Marathi name for the traditional turban worn in Maharashtra), and placed them at Baba's feet. (Shri Sai Satcharita, Chapter 15)

Sai Baba, simultaneously, reminded him of the tradition of Narad Muni, who strolled the three worlds for his *sankirtans* bare-bodied, only in a loin cloth. The sage Narad, the celestial *kirtankar* - from whom the *kirtan paddhati* originated, wore nothing on his upper body and head. He carried a *'veena'* in his hand and wandered from place to place, singing the glory of the Lord. (Veena is a classical instrument basically a plucked stringed instrument.).

Ever afterwards, in all weather, Dasganu performed his *kirtans* bare-bodied. He was always bare from his waist up, with a pair of *'chiplis'* in his hand, and a garland around his neck.

Sai Baba's advice stuck to him through his lifetime. Baba gave Dasganu great wisdom and ability to grasp the essence of His message.

Thus, **Shirdi Sai Baba transformed Dasganu Maharaj into Narad Muni**.

What a transformation!

– Dr. Subodh Agarwal
'Shirdi Sai Dham',
29, Tilak Road, Dehra Dun - 248 001,
Uttarakhand.
Mobile : **(0)9897202810**
E-mail : **subodhagarwal27@gmail.com**

शिर्डी साईं बाबा – श्री साईंनाथ नाम क्यों ?

साईं का अर्थ है – स्वामी, मालिक, ईश्वर, आत्मा, तथा नाथ का अर्थ प्रभु रक्षक से है। गोरख पंथी साधुओं के नाम के पीछे नाथ लगा रहता है, तथा यह गोरख पंथी साधुओं की उपाधि भी है। नाथ सम्प्रदाय एक पारमार्थिक पंथ है। मध्य युग में उत्पन्न इस सम्प्रदाय में बौद्ध, शैव तथा योग की परम्पराओं का समन्वय मिलता है। शिव इस सम्प्रदाय के प्रथम गुरु एवं आराध्य हैं और इस पंथ के लोगों को शिव का वंशज माना जाता है।

नाथ सम्प्रदाय के अधिकतर सदस्यों का मानना है कि भगवान् दत्तात्रेय त्रिमूर्ति ब्रह्मा, विष्णु, महेश के अवतार थे। गुरुदत्त को भगवान् दत्तात्रेय के नाम से जाना जाता है। भगवान् दत्तात्रेय में ब्रह्मा, विष्णु, महेश, जो क्रमशः उत्पत्ति, स्थिति और संहारकर्ता हैं, का समावेश है। भगवान् दत्तात्रेय में ब्रह्मांड की महान अद्वितीय अलौकिक दिव्य शक्तियों का समावेश होने के कारण उन्हें संतों के रूप में उच्च सम्मान दिया जाता है।

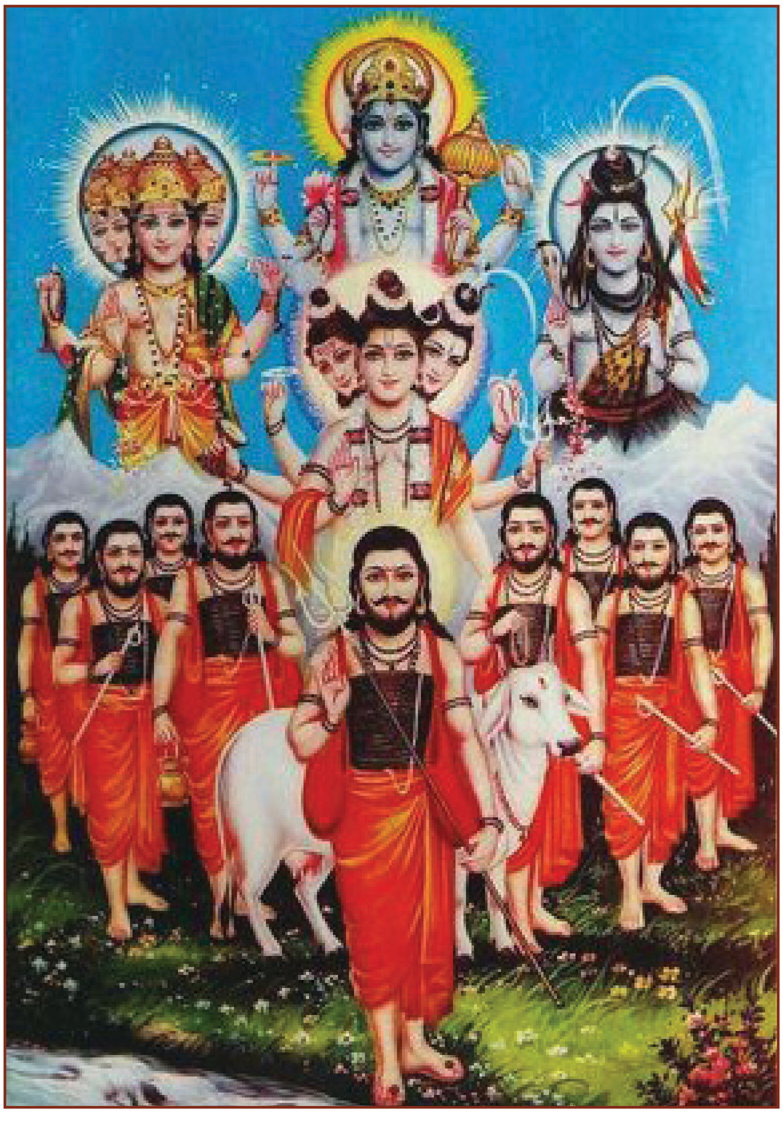

आध्यात्मिक ज्ञान की उपलब्धि सद्गुरू की अनुकम्पा से प्राप्त होती है तथा वे मनुष्य को सत् मार्ग पर चलना सिखाते हैं; इसलिए जीवन में सद्गुरू का विशेष महत्व है। सद्गुरू श्री साईं बाबा दत्तात्रेय अवतार हैं तथा उनकी पूजा भगवान् दत्तात्रेय के रूप में की जाती है।

इस प्रकार से कहा जा सकता है कि साईं हमारे स्वामी हैं, मालिक हैं, ईश्वर हैं और हमारी आत्मा है। साईं के साथ नाथ लगा देने पर सृष्टि के पालनहार शिव का नाम जुड़ जाता है और दत्तात्रेय का अवतारी होने पर उनमें ब्रह्मा, विष्णु, महेश की शक्तियाँ निहित हो जाती हैं तथा जब हम शिर्डी के साईं बाबा को श्री साईं नाथ कह कर स्मरण करते हैं, तो वे हमारे स्वामी, मालिक, ईश्वर, आत्मा और रक्षक बन कर हमारी पग-पग पर मदद करके हमारी कठिन जीवन नैय्या को सरलता से पार कर देते हैं।

श्री साईंनाथ (श्री साईं बाबा) कौन थे और उनका जन्म कहाँ हुआ, ये ऐसे प्रश्न हैं, जिनका जवाब किसी के पास नहीं है। उन्होंने अपने जीवन का एक बड़ा हिस्सा एक पुरानी मस्जिद में बिताया, जिसे वे द्वारकामाई कहा करते थे। वे सिर पर सफ़ेद कपड़ा बाँधे हुए फ़क़ीर के रूप में द्वारकामाई में धूनी रमाए रहते थे।

इनके इस रूप के कारण कुछ लोग उन्हें मुस्लिम मानते थे। जबकि द्वारिका के प्रति श्रद्धा और प्रेम के कारण कुछ लोग उन्हें हिंदू मानते थे। लेकिन, श्री साईं बाबा ने दिखा दिया था, उनकी ना कोई जाति है, और ना कोई धर्म।

श्री साईंनाथ ने हिंदू हो या मुसलमान सभी के प्रति समान भाव रखा और कभी भी इस बात का उल्लेख नहीं किया कि वह किस जाति के हैं या धर्म के। उन्होंने हमेशा

मानवता, प्रेम और दयालुता को अपना धर्म माना तथा उनके सान्निध्य में जो भी आया, उसे बिना किसी भेदभाव के उनकी कृपा प्राप्त हुई। उनके इसी सद्व्यवहार ने उन्हें श्री साईंनाथ बना दिया। हालांकि उनका यह नाम कैसे पड़ा, इसकी एक रोचक कथा है।

श्री साईं बाबा लगभग सन् १८५४ ईसवी में पहली बार शिर्डी में दिखाई दिये। उस समय उनकी उम्र क़रीबन सोलह साल की थी। शिर्डी के लोगों ने उन्हें पहली बार एक नीम के वृक्ष के नीचे समाधि में लीन देखा। उन्हें कम उम्र में सर्दी–गर्मी, भूख–प्यास की ज़रा सी भी चिंता किये बगैर कठिन तपस्या करते हुए देख कर लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ। त्याग और वैराग्य की मूर्ति बने साईं ने धीरे–धीरे गाँव वालों का मन मोह लिया। वे कुछ समय शिर्डी में रह कर एक दिन किसी से कुछ कहे बिना अचानक वहाँ से चले गये। वे कुछ सालों के बाद लगभग वर्ष १८५८ ईसवी में चाँद पाटिल की पत्नी के भतीजे की बारात के साथ युवा फ़क़ीर के रूप में शिर्डी आये, तो भगवान् खंडोबा मंदिर के पुजारी पंडित म्हालसापति ने उन्हें बैलगाड़ी से बारातियों के साथ उतरते समय उनके तेजस्व को देख कर उनका ''आओ साईं'' कह कर सम्बोधन करते हुए स्वागत किया, और इसके पश्चात् ही वे 'साईं' नाम से प्रसिद्ध हुए।

धार्मिक ग्रन्थों में नाथ का अर्थ बताया है कि जो सांसारिक किसी भी विषय में रुचि न रखने वाला तथा केवल मोक्ष की प्राप्ति ही जिसका विषय है।

जो अनाथों की सहायता करते हैं उन्हें नाथ कहते हैं। साईं ने तो कई लोगों की सहायता की, उनकी रक्षा की, बच्चों की तरह देखभाल की। इसलिए वे साईंनाथ हो गये, साईं बाबा हो गये।

श्री साईंनाथ को शिर्डी के कुछ लोग शुरू में पागल समझते थे; लेकिन धीरे–धीरे उनकी दिव्य शक्ति और गुणों को जानने के बाद भक्तों की संख्या निरंतर बढ़ती गई। वे शिर्डी के केवल पाँच परिवारों से रोज़ दिन में दो बार भिक्षा माँगते थे तथा टीन के बर्तन में तरल पदार्थ और कंधे पर टंगे हुए कपड़े की झोली में रोटी और ठोस पदार्थ इकट्ठा किया करते थे। सभी सामग्रियों को वे द्वारकामाई में लाकर मिट्टी के बड़े बर्तन में मिला कर रख देते थे। कुत्ते, बिल्लियाँ, चिड़ियाँ नि:संकोच आकर खाने के कुछ अंश खा लेते थे। फिर श्री साईंनाथ बची हुई भिक्षा

को भक्तों के साथ मिल–बाँट कर खाते थे। उन्होंने अपने जीवन काल में अनेकों ऐसी लीलाएँ एवं चमत्कार दिखायें, जिससे लोगों ने उनमें ईश्वर का साक्षात् रूप महसूस किया। इन्हीं चमत्कारों ने उन्हें ईश्वर का अवतार – श्री साईंनाथ बना दिया।

श्री साईंनाथ का जन्म कब और कहाँ हुआ, इसका किसी दस्तावेज़ से प्रामाणिक पता नहीं चलता तथा उनके माता–पिता कौन थे, जन्म तिथि एवं स्थान की तरह उनके माता–पिता के बारे में भी प्रामाणिक रूप से कुछ भी ज्ञात नहीं है तथा स्वयं भी उन्होंने इस बारे में कभी कुछ नहीं बताया।

श्री साईंनाथ महाराज ने सभी धर्मों की एकता पर बल दिया और विभिन्न धर्मावलंबियों को अपने आश्रय में स्थान दिया। उनके अनुयायी हिंदू और मुसलमान दोनों भी हैं। उनके आश्रय स्थल में हिंदूओं और मुसलमानों के विभिन्न धार्मिक पर्व मनाये जाते। उन्होंने हिंदू धर्म–ग्रन्थों के अध्ययन को भी प्रश्रय दिया। उस समय देश के कई प्रदेशों में हिंदू–मुस्लिम द्वेष व्याप्त था, परन्तु उनका हमेशा यही संदेश रहा : ''राम और रहीम दोनों एक ही हैं और उनमें किंचित् मात्र भी भेद नहीं है। फिर तुम उनके अनुयायी होकर क्यों परस्पर झगड़ते हो। अज्ञानी लोगों में एकता साध कर दोनों जातियों को मिलजुल कर रहना चाहिए।''

श्रद्धालुओं का अनुभव है कि श्री साईंनाथ महाराज के श्री–चरणों में पहुँचने पर ईश्वर के प्रति सच्ची भक्ति प्राप्त होती है और यह मालूम होता है कि मानव जीवन क्या है तथा इस जीवन को कैसे कामयाब एवं सार्थक बनाना चाहिए। मनुष्य को मायायुक्त संसार को पार करने के लिए सद्गुरू श्री साईंनाथ महाराज को सच्ची निष्ठा से अपने हृदय में धारण करना चाहिए। जैसी जिसकी भक्ति होती है, वैसा ही निरंतर अनुभव भी प्राप्त होता है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए उसे अपने चित्त में जरा सा भी संदेह नहीं रखना चाहिए और भक्ति भाव को दृढ़ता के साथ चित्त में धारण करके सच्चे हृदय से सद्गुरू श्री साईंनाथ महाराज का नियमित रूप से पूजन व उनके नाम का सुमिरन करके उनके अनुभवों को प्राप्त करना चाहिए।

– सुरेश चन्द्र
२०/२९, लोदी कालोनी,
नई दिल्ली - ११० ००३.
ई-मेल : sureshchandra1962@gmail.com
दूरभाष : (०११)२४६४००४६
संचार ध्वनि : (०)९८१८६३९००२

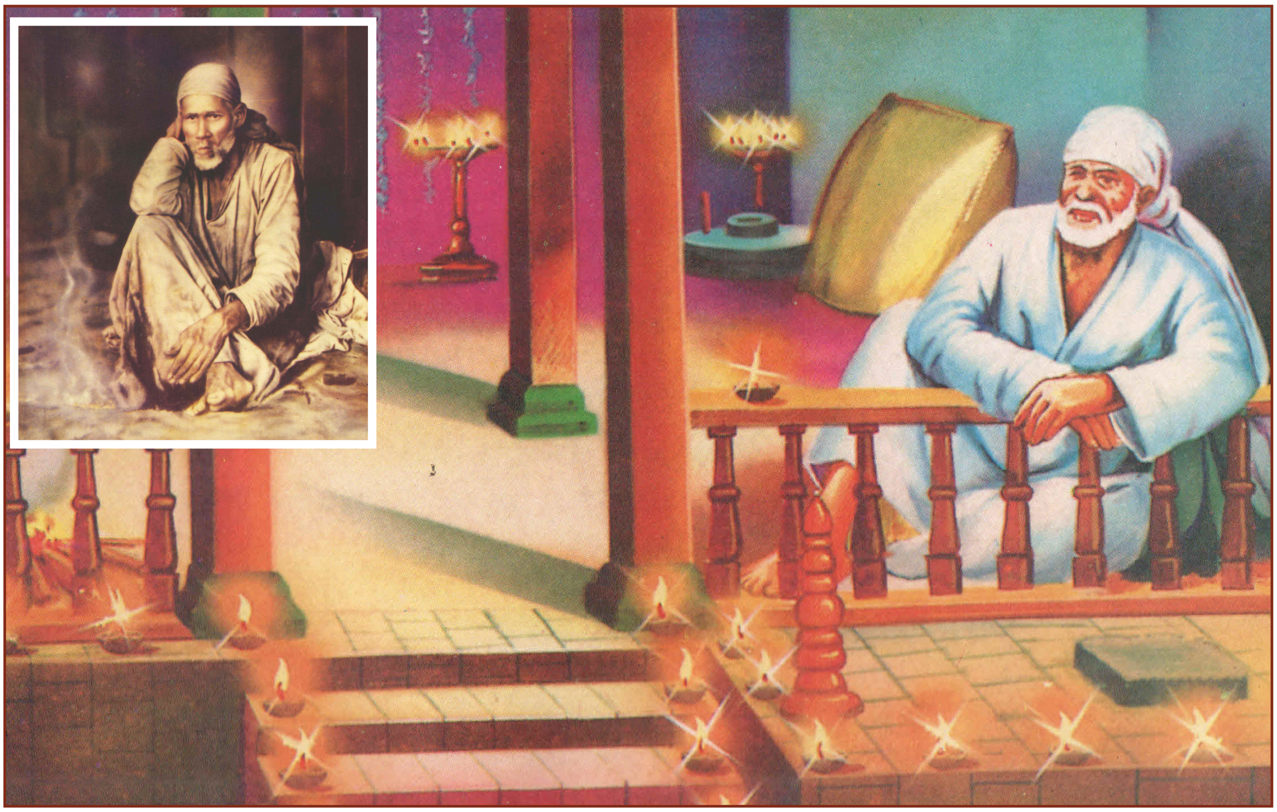

औदुंबर तले दत्तगुरु के दर्शन हुए!

स्थान – महाराष्ट्र में नया पनवेल। गाँव – सुकापूर। भगत वाड़ी। ... विशाल गूलर का वृक्ष। इस औदुंबर वृक्ष के तले विराजित दत्तगुरु। पास ही भगवान् शिवशंकर। दूसरी तरफ़ गणाधिपति श्री गणेश। वहीं से नज़दीक कलियुगी अवतार, सगुण ब्रह्म साचार प्रकट हुए स्वामी दत्तदिगंबर, मनलुभावन, ''भार तुम्हारा मैं वहन करूँगा'' ऐसा आशीर्वचन देने वाले श्री साईंनाथ की हास्य विलसित मूर्ति।

नया पनवेल में सुकापूर गाँव के भूतपूर्व सरपंच श्री दत्तात्रेय भगत जी की प्रशस्त वास्तु में श्री दत्त, श्री शंकर, श्री गणेश और श्री साईं बाबा का मंदिर बना हुआ है। औदुंबर वृक्ष के तले दत्त मूर्ति का विराजमान होना, यानि स्वयं दत्तगुरु का वहाँ निवास, माना जाता है।

हिरण्यकश्यप का संहार करने हेतु श्री विष्णु ने नरसिंह का अवतार धारण किया। इस अवतार ने औदुंबर वृक्ष से निकल कर हिरण्यकश्यप का वध किया और अपने लाड़ले भक्त प्रल्हाद की रक्षा कर उसे राजसिंहासन पर विराजमान किया। जिस खम्बे से नरसिंह प्रकट हुए उस खम्बे पर छोटे-छोटे पत्ते निकले... और देखते-देखते वहाँ विशाल वृक्ष स्थापित हुआ। भक्त प्रल्हाद तहे दिल से उस वृक्ष की पूजा-अर्चना करने लगा। एक बार उसे उस औदुंबर वृक्ष के तले ध्यानावस्था में श्री दत्तगुरु ने दर्शन दिये और उसे ज्ञानबोध किया। भक्त प्रल्हाद की असीम भक्ति देख कर श्री दत्तात्रेय ने उसे दीनजनों के उद्धार के लिए कलियुग में यतिवेष धारण कर अवतार लेने का आशीर्वाद दिया। उसी समय औदुंबर वृक्ष ने मनुष्याकृति धारण कर श्री दत्तगुरु के चरण-कमलों पर नतमस्तक होकर उसे भी वर देने की प्रार्थना की। तब श्री दत्तगुरु ने कहा,

''हर एक औदुंबर वृक्ष के तले मैं सूक्ष्म रूप में निवास करूँगा। तुम्हारे शरीर से नरसिंह प्रकट हुए, अत: कलियुग में मैं नृसिंह सरस्वती नाम धारण कर अवतार लूँगा। यह मेरा तुम्हें आश्वासन है।''

इस औदुंबर वृक्ष को कल्पवृक्ष के नाम से भी जाना जाता है। उससे एक कथा जुड़ी हुई है।...

हिरण्यकश्यप को मारते समय नरसिंह ने उसे अपनी गोदी में लेकर उसका पेट फाड़ कर वध किया था। उस समय नरसिंह के नाख़ून हिरण्यकश्यप के पेट में घूस गये, तब हिरण्यकश्यप के पेट का कालकूट जहर नरसिंह के नाख़ूनों में भर गया। जहर के कारण नरसिंह के नाख़ूनों में जलन होने लगी। नरसिंह की यह अवस्था देख कर माता महालक्ष्मी ने पास के औदुंबर के पके हुए फल लाये और नरसिंह को उन फलों में नाख़ून डालने के लिए कहा। ऐसा करते ही नाख़ूनों में होने वाला दाह कम हो गया। रौद्र रूपी नरसिंह शांत हो गये और अपने मूल विष्णु रूप में प्रकट हुए।

उस समय शीतलता के लिए।
नाख़ूनों को मिला सहारा औदुंबर का।
विषाग्नि हुआ शांत सारा।
शांत हुए रौद्र नरसिंह।।

लक्ष्मी माता के उपाय से श्री विष्णु माता लक्ष्मी और औदुंबर पर प्रसन्न हुए और उन्होंने आशीर्वाद दिया कि ''हे औदुंबर वृक्ष, तुम सदैव फलों से लदे रहोगे,

कल्पवृक्ष नाम से जाने जाओगे। जो कोई तुम्हारी तहे दिल से पूजा करेगा, उसकी सारी मनोकामनाएँ पूर्ण हो जायेंगी।'' इसलिए औदुंबर को भूतल का कल्पवृक्ष कहते हैं। इस वृक्ष का माहात्म्य श्री गुरुचरित्र में वर्णित है।

भारत में सर्वत्र यह महावृक्ष दिखाई देता है। ऐसा माना जाता है कि इस वृक्ष के आसपास की ज़मीन में पानी मिलता है। ऐसे कल्पतरु रूपी औदुंबर में अद्‌भुत दैवी गुणों के साथ-साथ औषधी गुण भी बहुत हैं।...

इस वृक्ष के छिलकों का अर्क़ निकाल कर उसे ठंडा कर उसमें मिश्री व इलायची मिला कर शरबत बना सकते हैं। कैंसर हुए व्यक्ति पर जब कीमोथेरपी का उपचार किया जाता है तब उस व्यक्ति के शरीर में बहुत दाह होता है। ऐसे समय वह व्यक्ति अगर यह शरबत दिन में तीन बार सेवन करेगा, तो उसका दाह कम करने में मदद होती है।

अतिसार होकर यदि ख़ून निकलने लगा, तो इस वृक्ष के छिलकों का काढ़ा बना कर पीना चाहिए।

इस वृक्ष के छिलकों से जख़्म धोने पर जख़्म जल्दी भर जाती है।

हिचकी अगर रुकती नहीं होगी, तो इस वृक्ष के फल के रस का सेवन गुणकारी होता है।

पाण्डु रोग में गूलर के पके हुए आधे पत्ते को खाने की पान-पट्‌टी में मिला कर खाने से राहत मिलती है।

ऐसा यह औदुंबर वृक्ष बहुगुणा है। ऐसे औदुंबर के तले श्री दत्तगुरु निवास करते हैं। ऐसा स्वयं श्री दत्तगुरु ने कह रखा है। ''मैं औदुंबर तले हमेशा वास कर रहूँगा। जब कभी मेरी याद आयेगी और मुझसे मिलने की इच्छा तीव्र होगी, तब तुम औदुंबर के पास आना, तुम्हे यहाँ मेरे दर्शन होंगे, तुम्हें सुकून मिलेगा।''...

नया पनवेल में सुकापूर गाँव में, भगत वाड़ी में श्री दत्तात्रेय भगत जी की वास्तु में औदुंबर तले श्री दत्तात्रेय की रमणीय मूर्ति है। लगभग आठ-दस साल पहले भगत जी ने इस मंदिर का निर्माण किया। भगत जी की ईश्वर पर असीम श्रद्‌धा है। उनका कुलदैवत खण्डोबा है। श्री साईं बाबा उनके अवतार काल में हमेशा कहते थे कि हमें अपने कुलदैवत की पूजा-अर्चना अवश्य करनी चाहिए। बाबा के इस कथन के अनुसार भगत जी अपने कुलदैवत की पूजा बड़ी लगन से करते हैं। पनवेल के आगे शिरढोण गाँव में स्थित खण्डोबा मंदिर के निर्माण में भगत जी का योगदान सराहनीय है। मनोर में उनके भाई ने श्री साईं बाबा के मंदिर का निर्माण किया है।

इस बारे में भगत जी की पत्नी श्रीमती अरूणा ने बताया कि उनके यहाँ एक व्यक्ति भाड़े से रहता था। कुछ दिन पश्चात् वह वहाँ से चला गया। उसके वहाँ से जाने के बाद श्रीमती अरूणा उस क़मरे की साफ़-सफ़ाई करने गईं, तब उन्हें वहाँ भगवान् शिव जी की मूर्ति दिखाई दी। वे अचरज में पड़ गईं। उन्होंने वह मूर्ति उनके घर के सामने स्थित औदुंबर वृक्ष के नीचे रखी।...

औदुंबर वृक्ष विशाल होने के कारण उसकी शाखाएँ सीधी नहीं थीं। वे टेढ़ी-मेढ़ी शाखाएँ काटने का भगत जी ने विचार किया। उसके लिए एक लकड़हारे को बुलाया गया। उस लकड़हारे ने एक शाखा तोड़ते ही, उसमें से पानी बहने लगा। यह दृश्य देख कर श्रीमती अरूणा की आँखें भर आईं। उनका दिल दु:खी हो गया। उन्होंने अपने पति से कहा कि वृक्ष जैसा है वैसा ही रहने दो। तद्‌नुसार वृक्ष को यथातथ रखा गया।...

इस अद्‌भुत अनुभूति के बाद भगत जी ने मन में सोचा कि उस स्थान पर दत्त भगवान् की मूर्ति स्थापित की जाये। उसके लिए उन्होंने वहाँ पर चबूतरा बना लिया। उचित दिन तय करके उस दिन विधिवत पूजन-अर्चन से श्री गणेश, श्री शिव जी की नई मूर्ति तथा दत्त भगवान् की मूर्ति की प्रतिष्ठापना की गई। श्री दत्तगुरु की पूजा बहुत ही सम्भाल कर करनी होती है; इसलिए एक ब्राह्मण नियुक्त किया गया। धीरे-धीरे औदुंबर तले उस जाग्रत् दत्तगुरु की अनुभूति भगत परिवार को आने लगी। दर्शन के लिए लोग आने लगे। इसके कारण मंदिर का विस्तार किया गया। भगत परिवार बड़ी लगन से दत्तगुरु की सेवा करने लगा। उस मंदिर परिसर में हमेशा अलग-अलग समारोह होते रहते हैं; लेकिन मंदिर की पवित्रता रखने के लिए यहाँ मांसाहार नहीं किया जाता। दत्तगुरु पर भगत परिवार की अटूट श्रद्‌धा है।...

हाल ही में आये एक अनुभव के बारे में श्रीमती अरूणा ने बताया कि उन्हें और उनके बेटे को कोरोना हुआ था। इलाज के लिए दोनों को अस्पताल में भर्ती

किया गया। मेरी तबीयत काफ़ी ख़राब हो गई थी। तब मेरे पति ने दत्तगुरु से कहा कि यदि मेरी पत्नी ठीक नहीं हुई, तो मैं मंदिर नहीं आऊँगा, पूजा–अर्चा भी नहीं करूँगा। दत्तगुरु की कृपा से मेरी तबीयत सुधर गई। कोरोना की जानलेवा बीमारी से मैं और मेरा परिवार बाहर आया।''

इस दत्तगुरु के चरण–कमलों पर एक भक्त ने एक गाय और उसका बछड़ा अर्पित किया था। आज उस गाय और बछड़े की संख्या बढ़ कर भगत परिवार की गोशाला पूरी भर गई है।

इसी वास्तु में दो साल पहले श्री साईं बाबा की मूर्ति स्थापित की गई है। उसकी पूजा–अर्चा भगत जी की पुत्री श्रीमती दामिनी पाटील करती हैं। श्री साईं बाबा के बारे में वे दिल खोल कर बातें करती हैं। श्रीमती दामिनी बता रही थीं... ''बाबा की पूजा करते समय मन प्रसन्न होता है। बाबा ने न केवल हमें, बल्कि गाँव के अन्य श्रद्धालुओं को भी अनुभूति दी है। श्री साईं बाबा की मूर्ति जयपुर से मँगवाई गई थी। उसकी स्थापना के पहले उसे एक गद्दी पर आसनस्थ किया गया था। बाद में ब्राह्मण के हाथों उसकी विधिवत् पूजा करके स्थापना की गई। पूजन–अर्चन होने के पश्चात् जिस गद्दी पर बाबा को बिठाया गया था

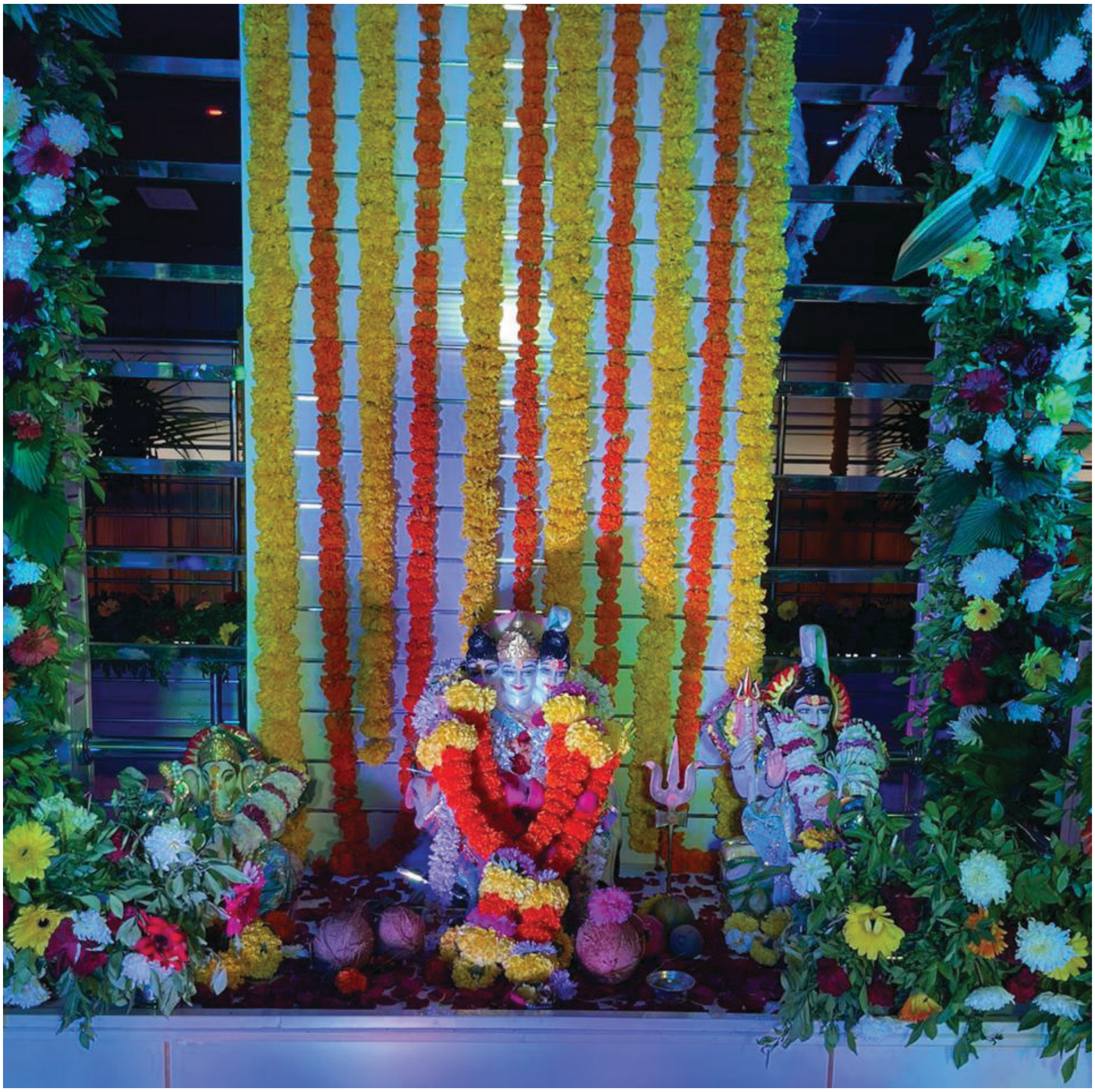

उस गद्दी को ब्राह्मण के माँगने पर वह उसे दे दी गई थी। किंतु, कुछ दिन पश्चात् वह ब्राह्मण उस गद्दी को लेकर वापस आया और उसने हक़ीक़त बताई। 'यह गद्दी मैं घर लेकर गया; लेकिन बाबा ने सपने में आकर मुझे पूछा कि तू यह गद्दी क्यों ले आया; मेरी गद्दी मुझे वापस कर! इसलिए यह गद्दी मैं वापस करने आया हूँ।' साईं बाबा ने हमें समय-समय पर उनके वहाँ के अस्तित्व का परिचय दिया है। हमारी पुकार पर वे दौड़े चले आते हैं। हम किसी भी ग्रन्थ का पठन नहीं करते, ना ही पारायण; बस् उनकी सेवा में निस्सीम भाव से लगे रहते हैं। हमने आज तक बाबा से जो कुछ माँगा, बाबा ने भर-भर कर दिया है। हर गुरुवार को यहाँ आरती होती है। गाँव के लोग बड़ी संख्या में उपस्थित रहते हैं। बाबा की पालकी पूरे गाँव में से निकाली जाती है। उस पालकी में काफ़ी संख्या में लोग शामिल होते हैं। दत्तजयंती, विजयादशमी जैसे बड़े उत्सव बड़ी धूमधाम से मनाये जाते हैं। भंडारा होता है। आज उनकी कृपा से मेरी माँ, मेरे पिता, मेरे बंधु अक्षय, अजिंक्य, भाभी श्रीमती कृतज्ञता, यह पूरा परिवार ख़ुशी से जीवन बिता रहा है। श्री साईंनाथ की असीम कृपा और आशीर्वाद हम सभी पर तथा समूचे गाँव पर बना रहे, यही उनके चरण-कमलों में मेरी प्रार्थना।''

– श्रीमती मयूरी महेश कदम
ई-मेल : **saimayumahesh@gmail.com**

मराठी से हिंदी अनुवाद
– श्रीमती अरुणा वि. नायक
अवकाशप्राप्त सहायक महाप्रबन्धक
रिज़र्व बैंक, मुम्बई

❍❍❍

Shirdi News

* Public Relations Officer *
Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi
- Translated from Marathi into English by
Vishwarath Nayar
E-mail : vishwarathnayar@gmail.com

Temple will Open for *Darshan*!

Sunday, November 15, 2020 : The Maharashtra state government having ordered the opening of all religious places in Maharashtra state from November 16, 2020, Sri Kanhuraj Bagate, Chief Executive Officer of the Sansthan, has informed that 6000 devout-devotees will be allowed to avail the *darshan* in the Shri Sai Baba *Samadhi Mandir* daily, children below the age of 10, pregnant women, individuals above 65 years and Sai devotees not wearing a mask will not be given entry.

Sri Bagate stated that due to the corona-virus crisis worldwide, in the country and the state, the government having declared a lockdown as a preventive measure, the Shri Sai Baba *Samadhi Mandir* was closed for *darshan* for the devout-devotees since March 17, 2020. On November 14, 2020 the Maharashtra state government has ordered the opening of all religious places in Maharashtra from the auspicious new year day of November 16, 2020. The corona threat not having ceased yet, a planning meeting was organized at the Shri Sai meeting hall under the presidentship of the District Collector, Sri Rajendra Bhosale, to implement various measures by the Sansthan, from the viewpoint of the health of the devout-devotees, to open the Shri Sai Baba *Samadhi Mandir* for *darshan* to the devout-devotees. The Superintendent of Police, Sri Manoj Patil, Member of Parliament, Sri Sadashiv Lokhande, Legislator, Sri Radhakrishna Vikhe Patil, Additional Police Superintendent, Sri Agarwal, Pranth Officer, Sri Govind Shinde, Deputy Superintendent of Police, Sri Rahul Madane, Deputy Chief Executive Officer of the Sansthan, Sri Ravindra Thakare, *Tehsildar*, Sri Kundan Hire and the Sansthan's Chief Accounts Officer, Sri Babasaheb Ghorpade, giving guiding suggestions at this meeting, inspected the *darshan* line and the Shri Sai Prasadalaya.

After the *kakad aarati* on November 16, 2020, the Shri Sai Baba *Samadhi Mandir* will be opened for *darshan*, it was informed. 6000 devout-devotees will be given entry for *darshan* throughout the day. Of this 3000 will be paid passes and 3000 will be free passes. Devout-devotees will have to book passes online on the

website online.sai.org.in for darshan. Similarly, those devout-devotees who come to Shirdi will have to book offline for passes for *darshan*. Arrangements have been made for the offline *darshan* passes at all the *Niwas-sthans*. Of the 3000 offline passes 1000 passes will be given to the villagers of Shirdi from 5.45 a.m. to 6.15 a.m. at the *darshan* pass counters in the Sansthan's Sai Ashram 1, Shri Sai Baba Bhakta Niwas-sthan (500 rooms), Dwarawati Bhakta Niwas-sthan and Shirdi bus depot. Similarly, a total of 60 devout-devotees will be given entry for every *aarati*. Of these, 10 passes will be given to Shirdi villagers, who come first at every *aarati*. The 10 *aarati* passes for the villagers will be issued at the Sai Udyan Niwas-sthan, for this it will be necessary to show voter identity card and *aadhar* card. Without that entry inside the temple will not be given. VIP, VVIP and donor devout-devotees will be given 50 *aarati* passes. Also, paid *darshan* passes will be issued from the pass distribution section at the public relations office in front of gate number 1. It is mandatory for all devout-devotees to use mask while going for *darshan*. Devout-devotees not wearing mask, children below 10 years of age, pregnant women and individuals above 65 years of age will not be given entry inside the temple and taking flowers, garlands and worsip materials inside the temple is prohibited.

Entry for *darshan* to devout-devotees to be given from gate number 2, going to the *Samadhi Mandir* through Dwarkamai, taking *darshan* there, they will exit through gate number 5 via *Gurusthan*. Arrangements for sanitization, thermal screening and feet washing will be provided in the *darshan* line. Also, those devout-devotees having fever will be immediately sent to the COVID care hospital for check-up and treatment, Sri Bagate informed.

Similarly, only those devout-devotees, whose online booking for *darshan* have been confirmed, only they should come for *darshan* to Shirdi, or else they could be inconvenienced. Also, those devout-devotees who are sick should not come for *darshan*. Sri Bagate appealed to all devout-devotees to co-operate with the Sansthan.

8290 Devout-Devotees Avail *Darshan* on First Day

Monday, November 16, 2020 : The Shri Sai Baba *Samadhi Mandir* having opened for the *darshan* for the devout-devotees from today on November 16 after the *kakad aarati* early morning on the orders of the state government, about 8290 Sai devotees availed the *darshan* of the *Samadhi* of Shri Sai Baba throughout the day following social distancing norms, informed Sri Kanhuraj Bagate, Chief Executive Officer of the Sansthan.

Sri Bagate stated, 'the government having imposed a lockdown as a preventive measure due to the corona-virus crisis in the country and the state, the Shri Sai Baba *Samadhi Mandir* was kept closed for the *darshan* of Sai devotees since march 17. On November 14, 2020, the state government ordered the opening of all religious places in Maharashtra from November 16, the auspicious new year day. Also, since the threat of the corona-virus has not ceased yet, to enable the easy *darshan* of Shri Sai Baba and from their health point of view, the Sansthan has made arrangements for sanitization in the *darshan* line, conducting thermal screening and facility for washing the feet while entering the *darshan* line. Allowing entry to the devout arriving for the *darshan* through gate number 2, going through Dwarkamai and having the *darshan* in the *Samadhi Mandir*, exiting from gate number 5 via *Gurusthan*, was the route provided. Due to the Shri Sai Baba *Samadhi Mandir* being opened for the *darshan* of the devout after about 8 months, 8290 Sai devotees due to over enthusiasm availed the *darshan* of the *Samadhi* of Shri Sai Baba following social distancing norms. These included a large number of Shirdi villagers and the surrounding regions of Shirdi. And attractive floral decorations were

LIC
नॉव्हेल्टीज NOVELTIES
Gate No.3

done in the temple and the temple premises.'

Today, early morning after the *kakad aarati*, Sai devotees were given entry from gate number 2 for the *darshan* into the Shri Sai Baba *Samadhi Mandir*. Also, the *prasad*-meal for the Sai devotees was started in the Shri Sai Prasadalay. Today, about 3000 Sai devotees availed the *prasad*-meals throughout the day. The first 5 Sai devotees, who came for the *prasad*-meal here and the first 10 Shirdi villagers and 10 Sai devotees, who came for the mid-day *aarati* at 12 noon were accorded a traditional welcome by showering of flowers and sounding of musical instruments. Rs. 2.5 lakhs donations were received from Sai devotees in the donation office, Sri Bagate informed.

Sai devotees are expressing satisfaction due to the opening of the temple of Shri Sai Baba and the measures taken by the Sansthan. Similarly, in the wake of the corona pandemic, while opening the temple for the *darshan* of the devout, the Deputy Chief Executive Officer of the Sansthan, Sri Ravindra Thakare, Chief Accounts Officer, Sri Babasaheb Ghorpade, all administrative officers, all head of departments and employees under the guidance of the Chief Executive Officer, Sri Kanhuraj Bagate are making efforts for successfully planning the *darshan* and arrangements.

Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi has appealed to the office bearers of the *palkhi mandals* to refrain from coming to Shirdi with the *padayatris* accompanying *palkhis.*

Blood Donation Camp Inaugurated with Blood Donated by the Sansthan's Chief Executive Officer Sri Kanhuraj Bagate

Tuesday, November 24, 2020 : The blood donation camp organized at the Shri Sai Ashram 1 (1000 rooms) by the Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi was inaugurated by Sri Kanhuraj Bagate, Chief Executive Officer of the Sansthan, by being the first to donate blood.

The corona-virus (COVID-19) pandemic, still raging, the state government as a preventive measure due to the corona-virus threat imposed a lockdown from March 17. Presently the lockdown being gradually lifted, life of the people is returning to normal as before. Therefore, the shortage of blood is continuing to be felt for the day-to-day patients and planned and emergency surgeries. Thus, blood donation being the highest form and sacred donation, the Sansthan organized a blood donation camp at the Shri Sai Ashram1 from 9 a.m. to 5 p.m. Sri Kanhuraj Bagate, Chief Executive Officer of the Sansthan inaugurated the camp by himself donating blood at the camp. Sri Ravindra Thakare, Deputy Chief Executive Officer of the Sansthan, Dr. Akash Kisave and Sri Dilip Ugale, Administrative Officers, Dr. Vijay Narode, Medical Director and Dr. Maithili Pitambare, Medical Superintendent, were present on the occasion.

118 blood donors at this blood donation camp, including Shirdi villagers, Sai devotees, departmental heads of various departments and employees of the Sansthan, were presented a certificate, blood donor card and a motivational 3-D image of Shri Sai Baba and *Udi*, by the Sansthan.

Dr. Vijay Narode, Medical Director of the Hospital, Dr. Maithili Pitambare, Medical Superintendent and male and female nurses and employees took special efforts for the successful conduct of the said camp.

❍❍❍

Wednesday, November 25, 2020 : Shri Sai Baba *Samadhi Mandir* having opened for the devout-devotees from November 16, in the wake of the spread of the corona-virus (COVID-19), to facilitate the pilgrimage to Shirdi and the easy *darshan* of Shri Sai Baba for the devout-devotees, the Sansthan has started the 24 hours, permanent helpline section for the service of the devout-devotees, control room and WhatsApp facilities.

Presently, since the corona-virus (COVID-19) pandemic is on, the government has imposed a lockdown, as a preventive measure, since March 17, 2020. As per the state government's order on November 14, 2020, the Shri Sai Baba *Samadhi Mandir* has been opened from November 16, 2020 for the *darshan* of the devout-devotees. The spectre of corona is still raging. Since the temple has opened, thousands of devout-devotees are coming to Shirdi for the *darshan* of Shri Sai Baba's *Samadhi*. Prior to coming to Shirdi and post arrival, to facilitate providing information about the stay, meals, medical services and complete information about the *darshan*, easily and conveniently and to prevent them from being cheated, the Sansthan has set up the helpline cell and control room. This cell will be opened 24 hours permanently for the devout-devotees.

For this, the Sansthan has provided, the helpline mobile numbers +917588374469/ +917588373189/+917588375204, control room mobile numbers +917588371245/ +917588372254 and WhatsApp number +919403825314. Therefore, devout-devotees can contact on the said numbers, for more information, the Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi has appealed.

❍❍❍

₹ 03,09,83,148 Donation Received

During the Period November 16 to 24, 2020…

Wednesday, November 25, 2020 : The Shri Sai Baba *Samadhi Mandir* having opened for the devout on the orders of the state government, 48,224 Sai devotees availed the *darshan* of Shri Sai Baba during the period from November 16 to 24, 2020. And, during

this period the Sansthan received donations of Rs.3,09,83,148 in different forms from the Sai devotees.

The spectre of corona-virus (COVID-19) pandemic, still raging, due to the corona-virus crisis, the state government had imposed a lockdown since March 17.as a preventive measure. The Shri Sai Baba *Samadhi Mandir* having opened for the devout on the orders of the state government from November 16, about 48,224 Sai devotees availed the *darshan* of Shri Sai Baba during the period from November 16 to November 24, 2020. In this, having included time base, public relations office and online services, Rs. 61,04,600/- was received through the online and paid *darshan/aarati* passes. Also, during this period about 80,000 Sai devotees availed *prasad*-meal in the Shri Sai Prasadalaya.

Similarly, during this period from November 16 to November 24, donations of Rs. 3,09,83,148/- were received in cash. In this, the count in the donation boxes amounted to Rs. 1,52,57,102/-, donation counters Rs. 33,06,632, debit-credit cards, online, cheques, D.D.s donations and money orders Rs. 1,22,50,822/- and foreign currency of 6 countries amounting to approximately Rs. 1,68,592/-. And, the Sansthan received 64.500 grammes of gold and 3801.300 grammes of silver in the form of donations.

Thursday, November 26, 2020 : Sri Sadashiv Das, Chairman of Shri Saikripa Charitable Trust in Bhuvaneshwar, Odisha state donated Rs. 1 lakh worth of COVID protective materials and Rs. 1 lakh cash for *annadan*, thus totalling Rs. 2 lakhs in donation. He handed over these donations to the Deputy Chief Executive Officer of the Sansthan, Sri Ravindra Thakare. The COVID protective materials included 5000 units of surgical masks, 8500 units hand-gloves, 400 units face shields and 125 litres sanitizer.

Thursday, November 26, 2020 : The Shri Sai Baba *Samadhi Mandir* having been opened for the *darshan* of the devout on the orders of the state government subject to certain terms/conditions, the Padmasri Vitthalrao Vikhe Patil Sahakari Sakhar Karkhana Limited, Pravaranagar, donated 5000 litres of sanitizer to the Sansthan for the protection of Sai devotees.

Presently, with the corona-virus (COVID-19) pandemic still active, the government had imposed a lockdown from March 17, as a preventive measure due to the corona-virus crisis. As per the state government's order, the Shri Sai Baba *Samadhi Mandir* has been opened for the *darshan* of the devout from November 16, subject to some terms/conditions. The spectre of corona having not waned as yet, the Sansthan has provided sanitization in the *darshan* line, thermal screening and arrangement to wash feet while entering the *darshan* line, from the viewpoint of the health of the Sai devotees. Since more quantities of sanitizer would be utilized, the Sansthan had appealed to each sanitizer manufacturing sugar factories adjoining Shirdi to donate 5000 litres of sanitizer.

Accordingly, former Minister Sri Radhakrishna Vikhe Patil and Member of Parliament Sri Sujaydada Vikhe Patil on behalf of the Padmasri Vitthalrao Vikhe Patil Sahakari Sakhar Karkhana Limited, Pravaranagar, having already donated 1675 litres of sanitizer to the Sansthan, will be donating the balance sanitizer in phases as per the requirement.

◎◎◎

Saturday, November 28, 2020 : The Shri Sai Baba *Samadhi Mandir* having been opened for the *darshan* of the devout on the orders of the state government, 91,136 Sai devotees availed the *darshan* of Shri Sai Baba during the period from November 16 to November 27, 2020. During this period about 1,10,000 Sai devotees availed the *prasad*-meal at Shri Sai Prasadalaya,informed Sri Kanhuraj Bagate, Chief Executive Officer of the Sansthan.

Kanhuraj Bagate stated that presently, with the corona-virus (COVID-19) pandemic still raging, the government had imposed a lockdown from March 17, as a preventive measure. As per the state government's order, the Shri Sai Baba *Samadhi Mandir* has been opened for the *darshan* of the devout from November 16, subject to some terms/ conditions. The spectre of the corona-virus having not ended as yet, only a specified number of the devout are being given entry into the temple for the *darshan* of Shri Sai Baba, by maintaining social distancing. Hence, to avoid any inconvenience, Sai devotees should come to Shirdi for the *darshan* of Shri Sai Baba only after confirming their online booking. Similarly, the Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi is appealing to Sai devotees time and again to refrain the office bearers of the *palkhi mandals* from coming to Shirdi with the *palkhis* along with the *padayatris*.

During the period from November 16 to November 27, 2020, 91,136 Sai devotees availed the *darshan* of Shri Sai Baba through online, time base and paid *darshan* passes and about 1,10,000 Sai devotees availed the *prasad*-meal at Shri Sai Prasadalaya. Similarly, during this period, stay arrangement for 21,124 Sai devotees was made at the Sansthan's Sai Ashram Bhaktaniwas, Dwaravati Bhaktaniwas, Sai Dharmashala, Shri Sai Baba Bhaktaniwas-sthan (500 rooms) and Saiprasad Niwas, informed Sri Kanhuraj Bagate.

❍❍❍

In the *shastras*, for the different epochs different, means are prescribed for attaining *nirvan*. Penance for the *Krita Yug*, knowledge for the *Treta Yug*, sacrifice for the *Dwapar Yug* and charity for the *Kali Yug*.

Performance of charity and righteous action is always important. Pacifying hunger is the best of all. Therefore, giving food in charity should be done regularly. It takes precedence over all other actions.

Monday, November 30, 2020 : The Shri Sai Baba *Samadhi Mandir* having been opened for the *darshan* of the devout on the orders of the state government subject to certain terms/conditions, the Chairman of the Sanjeevani Sahakari Sakhar Karkhana in Kopargaon, Sri Bipindada Kolhe and Legislator Sou. Snehalatatai Kolhe donated 2250 litres of sanitizer to the Sansthan, for the protection of Sai devotees.

Presently, with the corona-virus (COVID-19) pandemic still raging, as per the state government's order, the Shri Sai Baba *Samadhi Mandir* has been opened for the *darshan* of the devout from November 16, subject to some terms/conditions. In the wake of the spread of the corona-virus, from the view-point of the health of Sai devotees, since larger quantities of sanitizer would be used in the temple and the *darshan* line, every sanitizer manufacturing sugar factory adjoining Shirdi were appealed to donate 5000 litres of sanitizer to the Sansthan.

Accordingly, the Chairman of the Sanjeevani Sahakari Sakhar Karkhana in Kopargaon, Sri Bipindada Kolhe and Legislator Sou. Snehalatatai Kolhe having donated 450 units (jars) of sanitizer (each having 5 litres), totalling 2250 litres of sanitizer to the Sansthan, will be donating the balance sanitizer in phases as per the Sansthan's requirement.

Thursday, December 3, 2020 : Sri Hasan Mushrif, Rural Development Minister, Maharashtra state and Guardian Minister of Ahmednagar district availed the *darshan* of Shri Sai Baba's *Samadhi*. Sri Kanhuraj Bagate, Chief Executive Officer of the Sansthan was present on the occasion.

Thursday, December 3, 2020 : Some devotees have complained to the Sansthan administration about those devotees, who are not appropriately attired in the Shri Sai Baba *Samadhi Mandir*. Regarding that the administration had requested and appealed to come to the temple for the *darshan* dressing decently and in keeping with the Indian culture. Sri Kanhuraj Bagate, Chief Executive Officer of the Sansthan informed that such boards were also put up on the temple entry gates.

Sri Kanhuraj stated that 'some devotees have complained to the Sansthan's administration that devotees coming for the *darshan* to the Shri Sai Baba *Samadhi Mandir* are not decently dressed. Taking cognisance of these complaints, the Sansthan administration appealingly requested to come to the temple for the *darshan* dressed fully decently and such boards have also been put up on the temple entry gates. Today, being a Thursday, about 9000 Sai devotees having availed the *darshan* of Shri Sai Baba, when all these Sai devotees were asked for their reaction to the boards put up on the entry gates, not a single devotee objected to it and noted their opinion that the said decision was appropriate. The Sansthan, not compelling Sai devotees about this, only made this appeal'.

Also, since the corona-virus is presently still raging, as per the state government's order, the Shri Sai Baba's *Samadhi Mandir* has been opened for the *darshan* of Sai devotees from November 16, subject to certain terms/ conditions. Considering the emergence of the corona-virus, from the health point of view of the Sai devotees, the Sansthan has taken measures to sanitize in the *darshan* line, to do thermal screening and to arrange facility to wash feet while entering the *darshan* line. Sai devotees are expressing satisfaction about these arrangements. Also, since the opening of the temple, the Sansthan taking care of the health of the employees, till date not a single employee has been found to be corona-virus infected. Along with this, the name and mobile number of Sai devotees come for the *darshan* being noted, those Sai devotees are contacted after 2 to 3 days and information is collected about their health, informed Sri Kanhuraj Bagate.

◎◎◎

Tuesday, December 8, 2020 : Sri Kanhuraj Bagate, Chief Executive Officer of the Sansthan informed that 15,506 Sai devotees noted their reaction during the period from December 3 to December 7, 2020, about the requesting appeal put up on the temple entry gates by the Shri Sai Baba Sansthan Trust, Shirdi, about coming to the temple for the *darshan* completely attired decently and in keeping with the Indian culture.

Sri Kanhuraj Bagate stated, 'some devotees have complained to the Sansthan's administration that devotees coming for the *darshan* to the Shri Sai Baba *Samadhi Mandir* are not decently dressed. Taking cognisance of these complaints, the Sansthan administration made a requesting appeal to come to the temple for the *darshan* dressed fully decently and such boards have also been put up on the temple entry gates. The Sansthan, not having compelled any devout about this, only made this appeal. Yet, to know the opinion of Sai devotees about these boards, the Sansthan arranged an opinion registration book and forms in the *darshan* line.

Accordingly, during the period from December 3 to December 7, 2020, about 15,599 Sai devotees, who came for the *darshan* of Shri Sai Baba, registered their opinion about the boards displayed on the temple entry gates. In this, 15,506 Sai devotees having not taken any kind of objection, opined that the said decision was absolutely appropriate. And, 93 Sai devotees opined that this decision was inappropriate, stated Sri Kanhuraj Bagate.

◎◎◎

Tuesday, December 29, 2020 : Sonakshi, a Sai devotee from the transvestite community in Chandigarh and her ten associates donated Rs. 11 lakhs in cash to the Shri Sai Baba Sansthan. Sri Kanhuraj Bagate, Chief Executive Officer of the Sansthan felicitated them on the occasion and thanked them. On the occasion, Sai devotee Sonakshi and her 10 associates stated that 'we all have come to Shirdi from Chandigarh, visiting many places on the way. Taking the *darshan* of Shri Sai Baba we all attain internal peace. We got to see good discipline here. Excellent measures have been taken in the wake of COVID-19 by the Shri Sai Baba Sansthan. All Sai devotees are seen to be wearing mask and following the norms of social distancing. There is no complaint from anybody about the *darshan* arrangements.'

The arrangements made by the Sansthan in the wake of COVID-19 being in the interest of the health of Sai devotees, everyone should avail the *darshan* of Shri Sai Baba, following the rules, stating so Sonakshi and her associates prayed at the feet of Sai to end the spectre of corona soon.

These Sai devotees having given donation, being provided the free *darshan-aarati* pass from the Sansthan, humbly declining it, preferred to take the *darshan* through the prescribed *darshan*-line only. In the background of alleged news of donations being demanded from some women devotees for *darshan-aarati*, this gesture is certainly touching. The Sansthan expressed heartfelt gratitude to all of them.

❍❍❍

SHRI SAI PROMISES :-

"Whoever puts his feet on the Shirdi soil, all his sufferings would come to an end...

Even after I cast off this body, I shall ever come running to the help of my devotees...

He, whose faith is steadfast at my feet and continuously chants 'Sai', 'Sai', will be filled with my grace and blessings..."

Year 2021

May

SU	30	2	9	16	23
MO	31	3	10	17	24
TU		4	11	18	25
WE		5	12	19	26
TH		6	13	20	27
FR		7	14	21	28
SA	1	8	15	22	29

June

SU		6	13	20	27
MO		7	14	21	28
TU	1	8	15	22	29
WE	2	9	16	23	30
TH	3	10	17	24	
FR	4	11	18	25	
SA	5	12	19	26	

July

SU		4	11	18	25
MO		5	12	19	26
TU		6	13	20	27
WE		7	14	21	28
TH	1	8	15	22	29
FR	2	9	16	23	30
SA	3	10	17	24	31

August

SU	1	8	15	22	29
MO	2	9	16	23	30
TU	3	10	17	24	31
WE	4	11	18	25	
TH	5	12	19	26	
FR	6	13	20	27	
SA	7	14	21	28	

RNI Regd. No.
MAH/BIL/2000/8048

SHRI SAI LEELA

Date : 15th December 2020

Year 2021

September

SU		5	12	19	26
MO		6	13	20	27
TU		7	14	21	28
WE	1	8	15	22	29
TH	2	9	16	23	30
FR	3	10	17	24	
SA	4	11	18	25	

October

SU	31	3	10	17	24
MO		4	11	18	25
TU		5	12	19	26
WE		6	13	20	27
TH		7	14	21	28
FR	1	8	15	22	29
SA	2	9	16	23	30

November

SU		7	14	21	28
MO	1	8	15	22	29
TU	2	9	16	23	30
WE	3	10	17	24	
TH	4	11	18	25	
FR	5	12	19	26	
SA	6	13	20	27	

December

SU		5	12	19	26
MO		6	13	20	27
TU		7	14	21	28
WE	1	8	15	22	29
TH	2	9	16	23	30
FR	3	10	17	24	31
SA	4	11	18	25	

श्री साईबाबा संस्थान विश्वस्तव्यवस्था (शिर्डी) के लिए मुख्य कार्यकारी अधिकारी द्वारा मे. हिरा प्रिंट सोल्यूशन्स प्रा. लि., ए-३१३, टी.टी.सी. इंडस्ट्रियल एरिया, महापे, नवी मुम्बई ४०० ७१० में मुद्रित और साईं निकेतन, ८०४ बी, डॉ. आम्बेडकर रोड़, दादर, मुम्बई - ४०० ०१४ में प्रकाशित।
* सम्पादक : मुख्य कार्यकारी अधिकारी, श्री साईबाबा संस्थान विश्वस्तव्यवस्था, शिर्डी